E-Learning material prepared by Dr. Dhananjay Vasudeo Dwivedi, Assistant Professor, Department of Sanskrit, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi

'मरुत्' देवता का परिचय

डा० धनञ्जय वासुदेव द्विवेदी

सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची

अन्तरिक्ष स्थानीय देवों में मरुत् का प्रमुख स्थान है। मरुत् वायु का वाचक है। ऋग्वेद में मरुतों को ३३ सूक्तों में सम्बोधित किया गया है। इसके अतिरिक्त इन्द्र के साथ ७ सूक्तों में तथा अग्नि और पूषन् के साथ एक-एक सूक्त में इनकी स्तुति की गई है।

मरुत् हमेशा एक समूह में सम्बोधित किए गये हैं। इनका उल्लेख एवं स्तवन सदा बहुवचन में मिलता है। सभी मरुद्गण समवयस्क हैं और एक साथ उदित होते हैं। ये रुद्र के पुत्र हैं अतः इनके लिए रुद्राः रुद्रासः का प्रयोग किया गया है। रुद्र के पुत्र होने के कारण ही मरुतों के लिए 'रुद्रियासः' विशेषण का प्रयोग हुआ है। पृश्नि रुद्र की माता है अतः इन्हें 'पृश्निमातरः' भी कहते हैं। कई मन्त्रों में इनकी उत्पत्ति गो से बताई गयी है। सायण के अनुसार गो का अर्थ भूमि है। इनकी उत्पत्ति पृथिवी, अन्तरिक्ष तथा आकाश में कही गयी है। एक स्थान पर मरुतों को वायु का पुत्र भी कहा गया है।

मरुत् स्वभाव से ही दीप्तिमान् और स्वयंप्रकाश हैं। विद्युत् के साथ इनका घनिष्ठ सम्बन्ध है। जब मरुत् वृष्टि करते हैं तो विद्युत् पृथिवी पर अपना प्रकाश फैलाती है। वे अपने हाथों में विद्युत् के साथ ही धनुष-बाण भी धारण करते हैं।

मरुतों का रथ स्वर्णिम है। इनके रथ के घोड़े चितकबरे हैं अतः इन्हें 'पृषदश्वाः' कहा जाता है। अत्यन्त शक्तिशाली मरुत् पृथिवी तथा आकाश का अतिक्रमण करते हैं। वृष्टि करना इनका प्रमुख कार्य है। वे अन्धकार को दूर कर सूर्य का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये अच्छे गायक भी हैं। मरुतों का गान वायु की ध्वनि का संकेतक है। मरुतों का इन्द्र के साथ भी घनिष्ठ सम्बन्ध है। इन्द्राणी इनकी मित्र हैं। विद्युत्, वायु और वर्षा से घनिष्ठ सम्बन्ध के कारण मरुत् तूफान के देवता के रूप में स्वीकृत हैं। श्रोदर आदि मरुत् को मृतकों की आत्मा कहते हैं।

मरुतों की समृद्धि का वर्णन स्थान-स्थान पर मिलता है। वे स्वर्ण के समान स्वर्णिम और अग्नि के समान दीप्तिमान् हैं। इनकी तलवारें और भाले बिजलियों के समान चमकते हैं। इनके अस्त्र-शस्त्र, आभूषण सभी स्वर्णिम हैं।

मरुत् पराक्रमी और शक्तिशाली देवता हैं। ये पहाड़ों और वृक्षों को हिला देते हैं। स्वर्ग और पृथिवी भी इनके भय से आक्रान्त रहते हैं। ये सूर्य के मार्ग को भी अवरुद्ध कर देते हैं। इन्हें इन्द्र का सबसे बड़ा सहायक कहा गया है। वृत्र के वध के समय इन्द्र इनकी सहायता लेते हैं। इन्होंने दैत्यों का संहार किया था।

मरुत् देवता भक्तों की रक्षा करते हैं और उनके रोगों का निवारण करते हैं। वे जल के रूप में लाभकारी औषधि प्रदान करते हैं। वे उपासकों को वैभव सम्पन्न कर देते हैं।

मरुद्गणों के ही सहयोग से भूमण्डल में इन्द्र को सर्वपूज्य देवता माना जाता है।

मरुद्गण भूमिगर्भा जल को अपने बल से आकाश में उठाकर फिर उन्हें वर्षा के रूप में पृथिवी पर भेजकर अन्न, फल, फूल तथा वनस्पतियों के उत्पादन में सहयोग देते हैं। ये सामान्यरूप से चलकर समस्त जीवों को प्राणवायु प्रदान करते हैं। यदि ये रुष्ट हो गए और भूमण्डल में अकाल पड़ सकता है।